राजनीति दर्शन का स्वरूप तथा इसका राजनीतिशास्त्र से भेद

राजनीति दर्शन दर्शनशास्त्र की एक प्रमुख शाखा है, जब दार्शनिक विधि से राजनीति का अध्ययन करते हैं, तो उसे राजनीति दर्शन कहते हैं। जिस प्रकार समाज का अध्ययन दो दृष्टियों से किया जाता है, वैज्ञानिक दृष्टि से या दार्शनिक दृष्टि से और जैसे वैज्ञानिक दृष्टि से समाज के अध्ययन को समाजशास्त्र कहा जाता है और दार्शनिक दृष्टि से अध्ययन करने को समाज दर्शन, उसी प्रकार राजनीति का भी दो दृष्टियों से अध्ययन किया जाता है; वैज्ञानिक दृष्टि से या दार्शनिक दृष्टि से। एक को राजनीतिशास्त्र और दूसरे को राजनीति-दर्शन कहा जाता है।

राजनीतिदर्शन के स्वरूप को जानने के लिए राजनीतिशास्त्र क्या है तथा उसके क्षेत्र को जान लेना आवश्यक है।

राजनीतिशास्त्र (Political Philosophy) अंग्रेजी शब्द Politics का हिन्दी पर्याय है। परम्परागत रूप से राजनीतिशास्त्र वह है जो मनुष्य के राजनीतिक जीवन और उससे सम्बद्ध समूहों और संस्थाओं का अध्ययन है। गेटल के अनुसार राजनीतिशास्त्र राज्य का विज्ञान है। यह विज्ञान राजनैतिक समितियाँ, सरकार के संगठन, कानून की व्यवस्था तथा अन्तर्राज्यीय सम्बंधों का अध्ययन करता है। गार्नर ने बताया है कि राजनीतिशास्त्र में राज्य की उत्पत्ति, उसके स्वरूप, राजनीतिक संगठनों के स्वरूप, उनका इतिहास तथा उनके रूपों और राजनीतिक सिद्धान्तों का अध्ययन किया जाता है। कभी-भी र० सिद्धान्त और र०द० को एक मान लिया जाता है; पर ऐसा मानना भ्रम है। राजनीतिक सिद्धान्त और राजनीति दर्शन में वैसा ही अन्तर है जैसा सामाजिक सिद्धान्त और समाज दर्शन में।

अतः संक्षेप में हम कह सकते हैं कि राजनीति वह है जिसका संबंध राज्य से है। राज्य के प्रमुख तत्व है (i) आबादी (ii) क्षेत्र (iii) सरकार और (iv) सम्प्रभुता इसमें सरकार के मुख्य काम तीन है: (i) कानून बनाना (ii) कानून लागू करना और (iii) कानून की व्याख्या करना। आधुनिक लोकतांत्रिक प्रणाली में सरकार के कार्यों को तीन शाखाओं द्वारा विभाजित किया जाता है।

राजनीतिक तथ्यों की व्याख्या के लिए राजनीतिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन होता है। पर वह कार्य राजनीतिशास्त्र के क्षेत्र में आता है। राजनीतिशास्त्र अन्य प्राकृतिक वैज्ञानिकों की भाँति तथ्यों की व्याख्या की चेष्टा करता है। उसका लक्ष्य लक्ष्य है तथ्यों की व्याख्या करना। अन्य प्राकृतिक विज्ञानों की भाँति उसके सिद्धान्तों का परीक्षण के द्वारा सत्यापन सम्भव है। अनुभव के द्वारा प्राप्त तथ्यों के आधार पर सामान्यीकरण और उनका परीक्षण राजनीतिशास्त्र में होता है।

अब यहाँ प्रश्न उठता है कि क्या राजनीतिविज्ञान विज्ञान है? इस प्रश्न का उत्तर देने के पहले यह समझ लेना आवश्यक है कि "विज्ञान" की विशेषताएँ क्या हैं। विज्ञान 'विशेष ज्ञान' है अर्थात् विशेष पद्धति के द्वारा प्राप्त वैध सुव्यवस्थित ज्ञान। अतः विज्ञान की तीन विशेषताएँ हैं। (i) वह एक सुव्यवस्थित ज्ञान है, इसमें तथ्यों का व्यवस्थित ढंग से अध्ययन किया जाता है। (ii) इसमें एक सुनिश्चित पद्धति होती है जिसका मुख्य काम है सत्यापन। (iii) इसके नियम सामान्य होते हैं। विज्ञान का लक्ष्य है सामान्य तर्कवाक्यों की स्थापना जिनमें वस्तु विषय की व्याख्या हो जाय और उसके कार्यों कलापों के विषय में पूर्वज्ञान हो सके।

राजनीति विज्ञान में राजनीतिक तथ्यों के विषय में वैध सामान्यीकरण की चेष्टा की जाती है। Hobbes ने इसे विज्ञान माना है। सर्वप्रथम गॉडविन तथा मेरी वूलस्टोन क्राफ्ट ने 'राजनीति विज्ञान' मुहावरे का प्रयोग किया था। आधुनिक व्यवहारवादियों ने 'राजनीति' में 'विज्ञान' विशेषताओं का उल्लेख किया है। पर समीक्षकों ने सर्वसम्मति से इस मत को नहीं माना है क्योंकि (i) इसकी पद्धति और विषय में एक मत नहीं है (ii) इसके विकास में निरन्तरता नहीं है। (iii) इसमें पूर्वज्ञान सम्भव नहीं है।

वास्तव में राज०वि० का वस्तुविषय भौतिक वि० से भिन्न है और उसके वैज्ञानिक अध्ययन में निम्नलिखित कठिनाईयाँ हैं: (i) विज्ञान की भाँति राजनीति विज्ञान ने अपनी अवधारणाओं को व्यक्त करने के लिए कोई समरूपी शब्द-भंडार की रचना नहीं की है। (ii) राजनीतिक तथ्यों की जटिलता के कारण उनकी वैज्ञानिक व्याख्या कठिन है। उदाहरण के लिए किसी मतदाता का विचार उसके तथ्यों पर निर्भर रहता है।

(iii) राजनीतिक तथ्यों के विषय में सत्यापन की समस्या के कारण सामान्य कथनों को स्थापित करना कठिन है।

(iv) राजनीति - अध्ययन का वस्तु - विषय मनुष्य है जो एक आत्मचेतना प्राणी है। वह भौतिक विज्ञानों के वस्तु - विषय से भिन्न है। अध्ययनकर्ता का निष्पक्ष होना जितना कठिन है उतना ही उसका अपने विचारों के अनुरूप राजनीतिक व्यवहार करना।

अतः इन कठिनाईयों के कारण रा० अध्ययन को विज्ञान की कोटि में नहीं रखा जाता। पर यह एक निराशावादी सोच है। राजनीतिक विज्ञान के कई ऐसे क्षेत्र हैं जहां सामान्य सिद्धान्तों की रचना हो सकती है। अतः इसे भी विज्ञान की कोटि में विकसित किया जा सकता है।

राजनीतिदर्शन के लक्ष्य :- जब दार्शनिक विधि से राज्य और राजनीति, राजनीतिक मूल्यों और राजनीतिक विचारधाराओं के बारे में चिन्तन करते हैं, तो उसे राजनीति-दर्शन कहा जाता है। डी० डी० रैफेल ने राजनीति-दर्शन के स्वरूप की चर्चा करते हुए बतलाया है कि दर्शन के दो लक्ष्य हैं। (i) अवधारणाओं का स्पष्टीकरण और (ii) विश्वासों का समीक्षात्मक मूल्यांकन

(i) अवधारणाओं का स्पष्टीकरण - राजनीति दर्शन का प्रथम लक्ष्य है राजनीतिक अवधारणाओं का स्पष्टीकरण। किसी विश्वास की तर्कसम्मता की परीक्षा के लिए उसमें जिन पदों का प्रयोग हुआ है उनके अर्थ को स्पष्ट करना आवश्यक है। कोई अवधारणा एक सामान्य प्रत्यय है। सामान्य प्रत्ययों से अनेक पदार्थों का संकेत मिलता है। 'विद्यार्थी' पद सामान्य है। यह प्रत्येक विद्यार्थी के लिए प्रयुक्त होता है। कोई नाम किसी विशेष पदार्थ का संकेत करता है। राजनीतिदर्शन का लक्ष्य है राजनीतिक सामान्य प्रत्ययों, जैसे, प्रजातन्त्र, न्याय, स्वतंत्रता आदि का स्पष्टीकरण करना।

(ii) विश्वासों की समीक्षात्मक मूल्यांकन -> राजनीति दर्शन का दूसरा लक्ष्य है राजनीतिक विश्वासों की समीक्षात्मक मूल्यांकन। P.P का संबंध ऐसे विश्वासों से नहीं है जो 'क्या सत्य है'? इसके विषय में ऐसे विश्वास हैं जो मनुष्य या समाज के लिए 'क्या उचित या शुभ है'। ~~इसके विषय में होता~~ जब ऐसे पुराने विश्वासों से संदेह उत्पन्न होता है तब रा० P यह जानने का प्रयत्न करता है कि कहाँ तक और किन युक्तियों के आधार पर

के आधार पर पुराने विश्वासों का औचित्य सिद्ध किया जा सकता किन बातों में पुराने और नये विश्वासों में असंगति है और क्या उन असंगतियों का किसी नई धारणा में समन्वय सम्भव है ? किस विश्वास की प्रमाणिकता का दूसरा मापदण्ड तथ्यों से मेल खाना भी है। पर औचित्य या शुभ-मूल्य-सम्बन्धी धारणाएँ हैं। अतः उनका वस्तुनिष्ठ अस्तित्व नहीं है। तो भी यदि प्रत्यक्ष रूप से नहीं तो अप्रत्यक्ष रूप से तथ्यों के आधार पर उनका परीक्षण हो सकता है। राजनीति-दर्शन का दृष्टिकोण यही है।

अतः राजनीति दर्शन में सामान्य प्रत्ययों का स्पष्टीकरण विश्लेषण तथा उनका विस्तार कर दिया जाता है। किसी अवधारणा के विश्लेषण का अर्थ है उनके तत्वों का उल्लेख करना; जैसे, 'राज्य का विश्लेषण' उसको परिभाषित कर उसके तत्वों का उल्लेख करते हैं। किसी अवधारणा के 'संश्लेषण' का अर्थ है उसका अन्य अवधारणाओं से तार्किक सम्बन्ध दिखलाना जैसे अधिकार की अवधारणा से विधि की धारणा का तार्किक संबंध दिखलाया जा सकता है। अवधारणाओं के विस्तार करने का अर्थ है उसका विशिष्ट प्रयोग बतलाना जिससे उनमें अस्पष्टता न रह जाये। ये तीनों क्रियाएँ एक साथ होती हैं। इस प्रकार राजदर्शन में राजनीतिक अवधारणाओं को स्पष्ट तथा निश्चित करने का प्रयत्न किया जाता है।